International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 2, February 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यास 'नीलोफर' में अभिव्यक्त आदिवासी जीवन

डॉ. एस. हरिप्रिया
असिस्टेन्ट प्रोफसर, हिन्दी विभाग
यूनिवेर्सिटी कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम - १४

आधुनिक हिन्दी कथासाहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर है श्रीमती कृष्णा अग्निहोत्री। गत पाँच छः दशकों से वे लगातार लिखती आ रही हैं। उनका कथा साहित्य पन्द्रह कहानी संकलन एवं बारह उपन्यासों में सुरक्षित है। उनके कथासाहित्य में आप बीती घटनाओं का प्रस्तुतीकरण ही है। अपनी आत्मकथा के दो खण्डों में - 'लगता नहीं है दिल मेरा' और 'और .... और .... औरत' में आपने अपने जीवन को खोलकर रखा है। आपने नारी जीवन की समस्याओं को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। 'नीलोफर' आपका एक छोटा उपन्यास है सिजमें आदिवासी जीवन की व्यथा चित्रित है।

'नीलोफर' में समानान्तर रुप से तीन कहानियाँ बतायी गयी है। पहली कहानी का मुख्यपात्र है नीलोफर। 'नीलोफर' के सपने में खुलनेवाली एक और नीलोफर की कहानी भी है। नीलोफर गुलाम है। उसका जन्म दुबई के पास रेगिस्तान में हुआ है। जीवन के कडवाहटों के बीच उसका इकबाल नाम के गुलाम से प्यार हो जाता है। इकबल के मालिक की बेटी रुक्साना इकबाल के शरीर से आकृष्ट हो जाती है और उसे अपना पति बना देती है। इकबाल का एकनिष्ठ प्यार नीलोफर से ही था लेकिन रुक्साना के पति बनकर रहने को वह बाध्य था। अंग्रेज़ों से मिलकर वह व्यापार में तरक्की करता है। चार बेटों के जन्म के बाद वह नीलोफर से मिल पाता

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

है और उससे संबन्ध भी रखता है। यह जानकर रुक्साना नाराज हो जाती है और नीलोफर को मार देती है।

दूसरी कहानी है आदिवासी जीवन की। इसकी नायिका है नथनिया। उसके जन्म होते ही उसकी माँ की मृत्यु हो जाती है। दादाजी के परवरिश में वह बडी हो जाती है। वह वनदेवता, परबतियाबाबा आदि पर विश्वास करनेवाली है। घने जंगल में रहनेवाली नथनिया के कपडे पत्तों से बुनी है। जंगल में बकरी चराने आयी जुगिया से उसका परिचय हो जाता है। जुगिया से उसका परिचय हो जाता है। जुगिया के पति का नाम है झींगुर। वह तो निरा कामचोर है। वह अपनी गर्भवती पत्नी केलिए अन्न तक समेट नही पा रहा है। उनके यहाँ अन्न ही नहीं जल भी मिलना मुश्किल है। झींगुर का दोस्त है लाभू। लाभू की पत्नी चैती से झींगुर का लगाव है लेकिन लाभू इसे बुरा नहीं मानता है। लाभू बताता है "चलो मेरी जान छूटी।"1 चैती से संबन्ध का पता लगने पर जुगिया नाराज हो जाती है। लेकिन जब झींगुर बताता है कि "चैती बुरी नहीं उसने तेरेलिए यह भेजा (हिरण का सिंका गोश्त) है"2 तब जुगिया कहती है "ठीक है चैती अच्छी है तू कभी-कभी वहाँ चला जाया कर।"3

आदिवासी जीवन का एक अन्य घटना स्थल है ननुदादर टीला जो अमरकंटक से चार पाँच मील दूरी पर है। मंगलू यहाँ के रहनेवाला है। मंगलू और भाई रमलू गाय और भैंस को पालते है लेकिन जंगल के पास होने पर भी जानवरों को चारा नहीं मिलता। वह कहता है - 'सरकार ने किसी को ठेके पर दे दिया है। कोइं देख्रेगा तो मुश्किल हो जाएगी। मंगलू रमलू, जुगिया, झींगुर, चैती लाभू आदि आदिवासी

तो हैं ही लेकिन वे कुछ खेती बारी करनेवाले, साधारण जीवन से निकट का जीवन बितानेवाले हैं।

'नथनिया' घने जंगल में बसनेवाली है। उसका रूप देखिए "हरे पत्तों से ढंकी? चेहरा गोरा! पीला रंग। कंधे पर तीर कमान।"4 देखकर ऐसा लगता है कि वह एक वनदेवी हो। उसे एक भालू का शिकार करते दिखाया गया है। मंगलू के पूछने पर कि इतने घने जेगल में तुम कैसे रहते हो, नथनिया का बाबा उत्तर देते हैं - "जहाँ मेरे बाबा रहते थे वहीं हम रहते हैं"5 आदिवासियों को पढाने और सरकार की तरफ से उनकेलिए आयोजित योजनायें अमल करने केलिए शिक्षक अशोक वहाँ आ जाते हैं। वे आदिवासी कल्याण के कार्य में जुट जाते हैं।

नथनिया कुछ जडी बूटियों को पहचाननेवाली है। लेकिन घने जंगल में रहने के कारण उसका जीवन शायद जानवरों जैसा ही था। न कोई वस्त्र पहनती थी और नियमित रूप से भोजन तक नही लेती थी। मंगलू और नथनिया के बीच गहरा परिचय हो जाता है। नथनिया के दादाजी की मृत्यू हो जाने के बाद मंगलू नथनिया को साथ ले चलता है। नथनिया को मंगलू अच्छा लगता है लेकिन वह उससे शादी करने केलिए तैयार नही है।

जुगिया और झींगुर के बेटे को किसी जानवर उठा ले जाता है और जुगिया पागल हो जाती है। लाभू और चैती उसे संभालने आते हैं। चौती से झींगुर का संबन्ध और गहरा हो जाता है। जुगिया इसे देख नाराज हो जाती है और चैती पर पत्थर दे मारती है। झींगुर आवेश में आकर जुगिया के गर्दन काट डालता है। जुगिया मर जाती है। झींगुर को लेने पुलिस तक आता नहीं। उन्हें पुलिस या सरकार का पता भी नहीं है।

इस उपन्यास के आदिवासी पात्र इतने निरीह हैं कि उन्हें अपने धर्म, देश तक का पता नहीं है। मास्टर अशोक उन्हें सिखाने का परिश्रम कर थक जाता है। मंगलू अच्छे जीवन की तलाश में जंगल से निकलकर अशोक बाबू के पास आ जाता है। नथनिया भी अशोक के क्लास में बैठकर पढते लगती है। नथनिया को गुरुजी-अशोक-अच्छा लगता है। अंत में दोनों के बीच में यौन संबन्ध हो जाता है। मंगलू को नथनिया पास आने नही देती थी और उसका कोशी से संबन्ध जुड जाता है। कोसी गोंड जाति की है अतः मंगलू वहाँ से निकाल दिया जाता है। इस पर मंगलू रो पडता है। वह कहता है "नथनी से शादी किये और रास रचाते रहे कोसी से।"6 इस पर अशोक का कहना है "ये सब तो तुम्हारे यहाँ रोज़ होता है।"7

कोशी से संबन्ध रखने के कारण मंगलू बाहर निकाला जाता है और अशोक मंगलू व नथनिया को लेकर जालंघर अपना देश चला जाता है। अशोक की माँ से नथनिया सभी घरेलू काम सीख लेती है। पंजाब के सांप्रदायिक दगे में अशोक की माँ मारी जाती है। अशोक नथनिया और मंगलू को साथ लेकर चल निकला लेकिन रेलवे स्टेशन से नथनिया गुम हो जाती है। उसे कोई उठा ले जाता है और उसपर बलात्कार हो रहा है। एक साल तक अत्याचारियों के कब्जे में रहने के बाद वह बच जाती है। वह गर्भवती थी लेकिन उसका बच्चा मर जाता है। आगे वह अपने आपको किसी धिनौनी बीमारी का शिकार समझ लेती है और अशोक से भी बिछुडकर वन चली जाती है। तब से वह लोगों को दवा देती चलती है। अशोक के हर काम में वह हाथ बंटाती भी है। वह बताती है - "ये सब तो वन देवता का चमत्कार है। वन तो कामधेनु है जडी बूटियां तो अमृत हैं।"8 अब उसका परिचय रानी देवी के रूप में है।

अशोक के हाथ बंटाने एक डाक्टर आता है गोविन्द। वह वहा की एक लडकी झांझर से प्यार का दिखावा करता है। वह उससे शादी करना नहीं चाहता है। पुन्नू की पत्नी झलकिया मधुआ के साथ जीने लगती है। और जब पुन्नू उसे लेने आता है तो वह बच्चे को छोडकर चली जाती है।

नथनिया एक पंडित से मिलकर बीमारों की सेवा शुश्रूषा करती थी। आखिर वह आतंकवादी निकला तो वह उसकी हत्याकर के जेल चली जाती है। अशोक वकील लगवाने की बात करता तो है लेकिन वह मानती नहीं है। आखिर उसे फांसी पर चढा देते हैं।

इसकी समानन्तर एक कहानी है नीलम या नीलोफर की। वह भोपाल की बाह्मण कन्या है। डाक्टर है। वह एक मुसलमान अहमद से शादी करती है। लेकिन उसे बाद मे ही पता चल जाती है कि अहमद स्मग्लर है। बिरादरी छोड आयी नीलम अब वफादार बीवी की भूमिका निभाने दुबई चली जाती है। जब उसे मालूम हो जाती है कि अहमद अत्याचारी है वह उसे कानून के हवाले करना चाहती है लेकिन अहमद उसे मार डालता है और मरने के पहले नीलोफर भी उस पर फायर करती है।

इस उपन्यास में आदिवासी जीवन के बारे में अच्छा चित्रण मिलता है। आदिवासी लोग वैसे ही निरीह हैं। उनकेलिए परिस्थिति के हर अंग भगवान होते हैं। जल को भगवान मानते हैं। उनकेलिए परबतिया बाबा होते है और जंगलबाबा। वैसे तो वे शिकार नहीं करते। अपने जीवन पर आपत्ति पड जाने पर ही वे उनको मार देते हैं। नथनिया के बाबा का कथन है - ''जंगल बाबा के ये सब खूबसूरत बच्चे हैं। इन्हें मारने से वो नाराज हो जाएंगे।''9

आदिवासी जीवन में अंधविश्वास का बडा स्थान है। वन में सिद्ध बाबा की पूजा होती है वहाँ एक पत्थर ही रखा गया है। उस पत्थर पर दारु डाली जाती है। ये लोग देवताओं को प्रसन्न करने केलिए मुर्गी की बलि चढाते हैं और मुर्गी का प्रसाद कच्चा ही खाते हैं। इन्हें गेहू आदि से कोई परिचय नही है। जडी बूटियों और मक्के से ही काम चल जाता है। ये गरीब तो हैं लेकिन इनकी शादी में दारु और गोश्त ज़रुर चाहिए।

आदिवासियों की एक रीति है भगोरिया। "यह आदिवासियों का मेला है जिसमें लडके लडकी एक दूसरे को पसंद करके पान खिलाते है और भाग जाते हैं।"10 इनका यौन संबन्ध भी कुछ खुला सा है। दारु पीकर ये लोग दूसरे की पत्नी के साथ भी छोडखानी करते हैं। विवाह तो एक ही से होता है लेकिन कभी कभी अन्यों से भी रिश्ता बनाये रखते हैं।

ये लोग पशुपक्षियों से बहुत अधिक प्यार करनेवाले होते हैं। ये साधारणतया पशु पक्षियों को मारते नहीं। नथनिया के कुछ मित्र होते हैं दो कबूतर, एक बंदर और हरियल तोता। इस उपन्यास में नथनिया के कबूतर उसके साथ ही प्राण त्यागता है।

ये लोग अशिक्षित है। अतः उन्हें नहीं मालूम है कि प्यार क्या होता है? पुलिस क्या है और सरकार क्या है। उनको राजनीति के नाम पर भडकाने का श्रम तो होता है लेकिन असफल निकलता है। इनका जीवन बहुत सरल है। नथनिया जब गुरुजी से संबन्ध रखती है तब वह बताती है मंगलू भी दूसरी शादी करेगा।

यहाँ आदिवासियों के शोषण का भी चित्र मिलता है। आदिवासियों को दस एकड़ जमीन देने की व्यवस्था है लेकिन अज्ञानवश वे उसे पा नहीं सकते। ये लोग

पुलिस और उनकी कार्रवाइयों से अपरिचित हैं। वे बताते हैं। "हम आपसी काडी खुद मोडेंगे। दूसरो का बीच में क्यों लायेंगे।"11 चुनाव के समय राजनीतिवाले इन्हें भडकाते हैं। इन्हे सिनेमा दिखाकर दारु पिलाकर इनसे वोट कबूल करते हैं और चले जाते हैं।

नीलोफर में आदिवासी जीवन का अच्छा चित्र मिलता है। आदिवासियों के जीवन को निकट से देखे बिना उनपर कुछ लिखना असंभव है। यहाँ कृष्णा जी ने गुलामों के जीवन को, आदिवासी जीवन को और नारी की विवशता को एक ही रचना में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। आदिवासी लोग वैसे ही आदिम निवासी हैं। उनके जीवन एवं रीति रिवाजों से हम अपरिचित हैं ही। यहाँ कृष्णाजी ने आदिवासियों के जीवन को समझाने के प्रयास में सफलता हासिल की है।

पाद टिप्पणी

1. कृष्णा अग्निहोत्री, नीलोफर, पृ. 63
2. कृष्णा अग्निहोत्री, नीलोफर, पृ. 64
3. कृष्णा अग्निहोत्री, नीलोफर, पृ. 64
4. कृष्णा अग्निहोत्री, नीलोफर, पृ. 69
5. कृष्णा अग्निहोत्री, नीलोफर, पृ. 69
6. कृष्णा अग्निहोत्री, नीलोफर, पृ. 111
7. कृष्णा अग्निहोत्री, नीलोफर, पृ. 111
8. कृष्णा अग्निहोत्री, नीलोफर, पृ. 129
9. कृष्णा अग्निहोत्री, नीलोफर, पृ. 70
10. कृष्णा अग्निहोत्री, नीलोफर, पृ. 124
11. कृष्णा अग्निहोत्री, नीलोफर, पृ. 138